Rs. 10/-

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

nbt.india
एकः सूते सकलम्
Vol. 19, No. 7, July 2014

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 7, July 2014 **वर्ष 19, अंक 7, जुलाई 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र
Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव
Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार
Illustrator / चित्रकार
Raju Gupta
राजू गुप्ता

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

Nurturing Children's Creativity...		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
The Breakthrough	Rajendra Awasthy	5
जीवन को भी पढ़ना सीखें	अशोक प्रियदर्शी	9
चूहे के गले में घंटी	श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी	10
स्नोफॉल	अनिल 'सवेरा'	11
The Crocodile's Sister	Sailabala Mahapatra	12
अनोखी सजा	डॉ. शोभा अग्रवाल	14
दो कविताएँ	रमा नीलदीप्ति शर्मा	18
Interesting Facts...	Surekha Sachdeva	19
गीत गिनती का	डॉ. अर्चना रानी वालिया	22
हृदय परिवर्तन	डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'	23
When Bruno Came...	Tamanna Pankaj	28
गधा बना शेर	डॉ. नीता सरकार	29
The Large World...	Ansh Tangri	31
घर के टब में चलती...	आइवर यूशिएल	32

***Editorial Address/* संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निशुल्क वितरित किया जाता है।

Nurturing Children's Creativity through Shiksha Shivirs

In a series of *Shiksha Shivirs* that are being organised by National Book Trust, India across the country to promote books and reading habit amongst children especially in the region with high concentration of SC and STs, several book related events were organised at Shimla, Mandi and Pandoh (Mandi District) in Himachal Pradesh.

During the NBT-Shimla Book Fair (30 June – 6 July 2014), a 2-day *Shiksha Shivir* was organised at Gaiety Theatre, Shimla from 3 to 4 July 2014. Several events for children like recitation of poetry, storytelling, story making and book discussion were organised in the Shiksha Shivir. More than 300 children from different schools participated in these events. Shri Shrinivas Joshi, Ms Vidhupriya Chakraborty, Principal, St. Thomas School, Shri Ajay Sharma, Assistant Director, Education and Shri S R Harnot, eminent writer were the resource persons. Shri Manas Ranjan Mahapatra, Ms Sunita Narotra and Ms Shahkar Saleem from NBT conceptualized and coordinated these programmes.

During the NBT-Mandi Book Fair (16-22 June 2014), a 2-day *Shiksha Shivir* was organised at Government Centre Primary School, U-Block, Mandi on 19 June 2014. The Shivir was

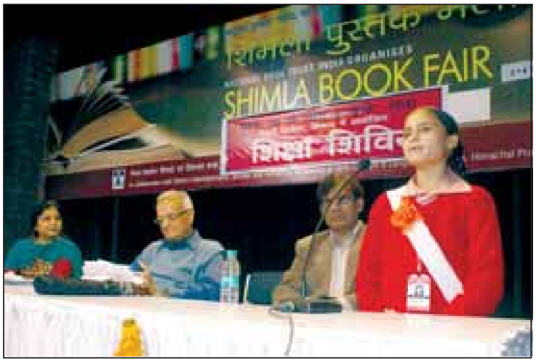

inaugurated by Ms Mukta Thakur, Block Education Officer of Bal Mandi. Many fun-filled and creative activities for children including storytelling, drawing competition, paragraph writing, mental maths etc. were organised. More than 250 students from different schools of Bal Mandi, Mangwai, Dhanhera, Old Mandi, Chipru, Kaliyaar and New Colony Mandi participated in these activities.

On 20 June 2014, *Shiksha Shivir* was organised at Government Primary School, Pandoh, District Mandi. The Shivir was inaugurated by Shri Ramesh Vidyarthi, Deputy Director, Elementary Education. Many fun-filled and creative activities for children including drawing competition, paragraph writing, mental maths, storytelling etc. were organised. More than 200 children from different schools participated in the activities. Ms Sunita Narotra coordinated these programmes.

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 16

सात समुंदर

चलना है तो गिरने से क्या डरना?
डटकर जीओ, पल-पल कभी न मरना।

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

गायत्री स्कूल जाने में आनाकानी कर रही है और उसकी माँ उसे झकझोरकर उठाने की कोशिश में है। दद्दा गायत्री के पक्ष में बोलते हैं। स्कूल में जब उसे झपकी आती है तो उसकी वर्ग सहपाठी, मल्ली अध्यापिका से उसकी शिकायत करती है जिससे दोनों में अनबन हो जाती है। बाद में कसके उनमें तू-तू मैं-मैं होती है। अब इस अंक में कुछ नई बातें...

उपनिषद की एक कहानी है कि एक बार प्राण, मन, वाक्, नेत्र और कर्ण में बहस छिड़ गई कि इनमें श्रेष्ठ कौन है। नेत्र ने कहा, "मैं न रहूँ तो मनुष्य कुछ भी देख नहीं सकता।"

उसी तरह कर्ण ने कहा, "मेरे बिना कोई सुन नहीं सकता।"

सभी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित करने में लगे रहे। आखिर वे ब्रह्मा के पास गए। "प्रभु, आप ही निर्णय कर दीजिए।"

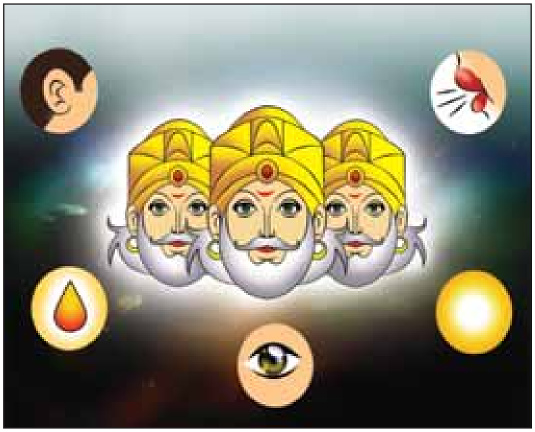

प्रजापति ब्रह्मा सभी के सृष्टिकर्ता हैं। वे बड़ी मुसीबत में फँसे—किसी एक को श्रेष्ठ कहेंगे तो बाकी सभी नाराज नहीं हो जाएँगे? सो उन्होंने कहा, "तुममें से जिसके न रहने से शरीर एकदम अचल हो जाए, समझो, वही सर्वश्रेष्ठ है।"

अब क्या था? सब बारी-बारी से मनुष्य का शरीर छोड़कर जाने लगे। सबसे पहले वाक् यानी वाणी ने शरीर को छोड़ा। "देखें, मेरे बिना तुमलोग कैसे रहते हो? जब तक मेरी श्रेष्ठता मान नहीं लोगे मैं वापस आने वाली नहीं हूँ।"

परंतु बात न करने से शरीर बेजान तो नहीं हो जाता। साल भर बाद जब वाक् वापस आई तो देखा, मशीन तो ठीक-ठाक ही चल रही है।

अब आँखों की बारी थी। परंतु उसके न रहने से भी ऐसा क्या फर्क पड़ गया? वापस आने पर शरीर ने कहा, "अरे भाई, दृष्टि रहती है तो बेकार की चीजों को देखने में समय

गँवाना पड़ता है। ऐसे तो बैठे-बैठे ईश्वर चिंता में मजे में दिन कट जाते थे।''

आँखें भी शरमा गईं।

इसके बाद कान। परंतु न सुनने से किसका क्या बिगड़ता है? बल्कि फालतू बातों को सुनना नहीं पड़ता। फिर मन ने भी शरीर का साथ छोड़ा। एक वर्ष बाद वापस आया तो शरीर ने कहा, ''भाई, मन चंचल होता है। तुम न थे तो मैं स्थिर था, चिंतामुक्त था।''

मन भी लज्जित हुआ।

अब प्राण की बारी थी। परंतु वह शरीर त्याग करने ही वाला था कि समूचे शरीर में त्राहि-त्राहि मच गई। वाक्, नेत्र, कर्ण, मन सभी चिल्लाने लगे। ''अरे भाई, हमें छोड़कर कहीं न जाओ। तुम्हारे बिना तो जगत अंधकारमय है। तुम बिन सब सूना।''

इस समय गायत्री की कहानी भी बहुत कुछ ऐसी ही थी। रोज की भागदौड़, सुबह-सुबह उठना, हरिपदम् से अलेप्पी तक जाना-आना, फिर स्कूल, होमवर्क न कर सको तो डाँट, किस्मत खराब हुई तो सजा... गायत्री का शरीर थककर चूर हो जाता। तन का अवसाद मन में फैल जाता। इतनी कठिन ट्रेनिंग! वह ट्रेनिंग से कतराने लगी। मन का दीया बुझ जाए तो शरीर का क्या दोष?

घर में भी वह कभी-कभी अकड़ जाती। अगर अनंती कहती, ''गायत्री, जरा कॉफी के बरतन तो धो दे बेटी!'' तो वह झुँझलाने लगती, ''ओफ्फो, सारा काम मुझको ही करना पड़ता है!''

दादी कभी-कभी शाम को रामायण का पाठ करती है। किसी दिन अगर उन्होंने कहा, ''अरी गायत्री, जरा देख तो, मैंने रामायण कहाँ रख छोड़ा है, तब से ढूँढ़ रही हूँ, मिलती ही नहीं।''

शायद किसी तकिए के नीचे या ठाकुरजी के कमरे में रखकर भूल गई होंगी। तो थकी-हारी गायत्री फट से उन्हें कह देती, ''कहाँ रख देती हो रोज-रोज? मुझे ही ढूँढ़ना पड़ता है।''

''अरी बेटी, तू नहीं ढूँढ़ेगी तो और कौन ढूँढ़ेगा? तेरे सिवा इस बुढ़िया का और है कौन?'' काँपती आवाज में दादी कहती और हँस देती।

मणि ने भी एक दिन अपने पिता से शिकायत की, ''अच्छा, यह क्या बात है, गायत्री कुछ ढीठ होती जा रही है।''

नारायणन हँस देते, ''अरे नहीं रे!'' फिर मन-ही-मन सोचते, कहीं हमारी तमन्नाओं के बोझ तले यह भोली-भाली बच्ची पिसी तो नहीं जा रही है? यह तो कोई जरूरी नहीं दुनियां में हर किसी से हर काम हो। नारियल से यह शिकायत करना मूर्खता है कि वह आम जैसा मीठा क्यों नहीं है।

जैसे कच्ची मिट्टी मिलने पर कुम्हार उसी से हाँड़ी, फिर दीया से लेकर देवी-प्रतिमा भी बनाता है, परंतु उसे सबसे ज्यादा संतोष प्राप्त होता है प्रतिमा बनाने में ही। क्योंकि इसमें शिल्पी को सृष्टि का आनंद प्राप्त होता है। उसी तरह कुमारन ने स्वयं अपने लिए भी एक परीक्षा का बंदोबस्त कर लिया था। गायत्री को वह कितना अच्छा तैराक बना सकते हैं। उनके दिमाग में आने वाली प्रतियोगिताओं की बात हर समय घूमती रहती थी।

उस दिन कुमारन ने गायत्री को डाइविंग बोर्ड से पूल में छलांग लगाना सिखा रहे थे। स्विमिंग पूल के एक सिरे पर सीढ़ी बनी हुई थी, उसी से ऊपर चढ़ना था। एक-एक ऊँचाई से कूदने के लिए अलग-अलग ऊँचाई पर प्लेटफार्म भी बने थे। ऊपर पहुँचकर गायत्री घबराने लगी। दूर-दूर तक सभी कुछ दिख रहा है।

स्टेडियम के एक तरफ ताड़ और नारियल के जंगल, सामने अलेप्पी की सड़क, उस पर दौड़ती गाड़ियाँ, जो छोटी-छोटी चींटी जैसी लग रही थीं। दूर आकाश के नीचे अर्द्धचंद्राकार तलवार की तरह तिरछी बहती हुई पंपा का पानी चमक रहा था। चिड़ियों का झुंड... हवा की साँय-साँय। उसने आँखें मूँद लीं। ''नहीं, मुझसे नहीं होगा।'' वह घबराकर नीचे उतरने लगी।

''गायत्री!'' कुमारन और कोच दोनों चिल्ला उठे, ''तुम्हें क्या हो गया है?''

''मुझसे नहीं होगा सर!'' गायत्री रुआँसी होकर बोली। उसकी धीमी-सी आवाज उनलोगों तक न पहुँची।

खन्-खन्-खन्...

तब तक दोनों सीढ़ी चढ़कर ऊपर आ गए और जबरदस्ती उसे ऊपर से नीचे धकेल दिया। गायत्री चिल्ला रही थी, ''मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो! मुझे तैराक नहीं बनना। अम्मा, अप्पुपन, कहाँ हो?''

धम्म...

इतने में वह पानी में पहुँच चुकी थी। सिर में हलकी-सी चोट आ गई, परंतु उसके हृदय से डर को भगाना जो था।

उस दिन वह रोते-रोते स्टेडियम से बाहर निकली। नारायणन पूछने लगे, ''क्या हो गया रे...!'

उसने कोई जवाब नहीं दिया। केवल ऊँ-ऊँ करती रही, बार-बार आँखें मलती रही।

जब वह घर पहुँची तो उसकी आँखें लाल थीं।

सी-26/35-40 ए, राम कटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

The Breakthrough

Rajendra Awasthy

It was the twelfth day of the battle of Mahabharata. Arjuna had wounded Shakuni and Shakuni's two brothers, Vrishak and Achal, had been slain. Even the famous warrior Dronacharya had been helpless before Arjuna's skill. Gloom and despair prevailed among the Kauravas, while the Pandava camp was filled with hope and joy.

This setback made Duryodhana mad with rage. He began to chide Dronacharya, "You aren't doing your best against Arjuna," he said in front of all the soldiers. "You are partial to our Pandava enemies."

Dronacharya was stung by the insult, "I am fighting the Pandavas with all my strength and yet you question my loyalty," he replied sorrowfully. "I have repeatedly told you that if you separate Arjuna from the Pandavas, I will defeat them in a day. But as long as Arjuna is

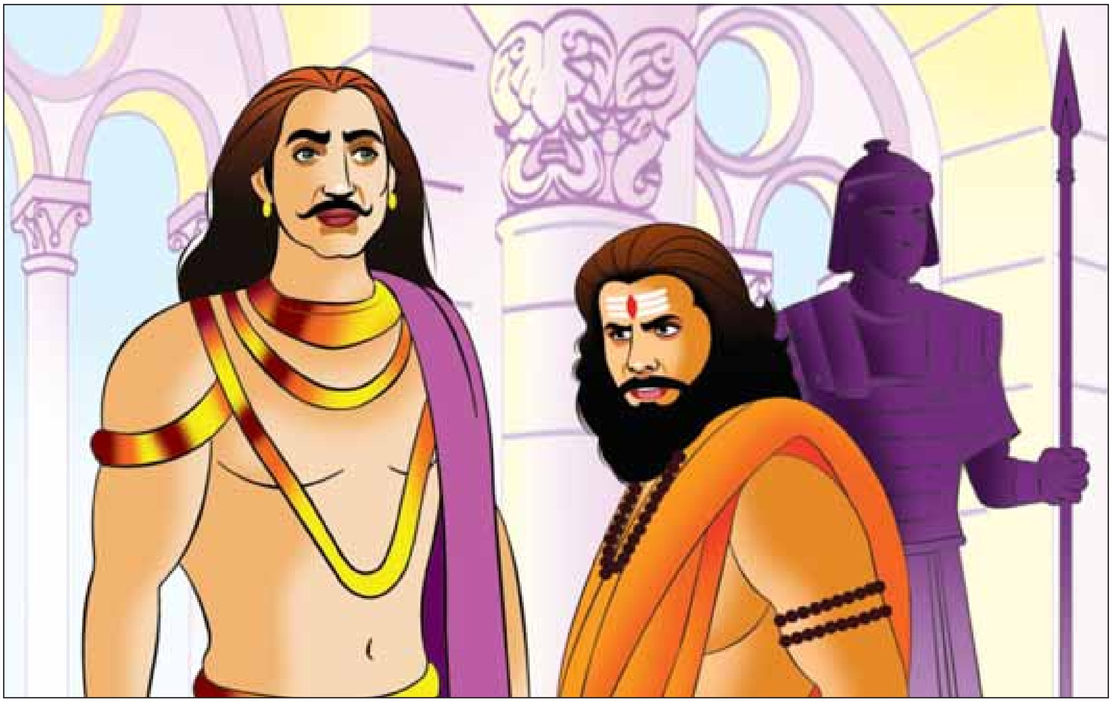

with them, the Padavas can never be beaten."

Duryodhana kept Dronacharya's words in mind and made plans for the next day's battle.

So dawned the thirteenth day.

Both camps got ready for the struggle. Fighting fiercely Arjuna drifted to the southern side of the battlefield. Dronacharya immediately surrounded the Pandava army and ordered the Kauravas to attack. The Pandavas faced the attack bravely but could not break out of the circle. Defeat stared them in the face and Arjuna was not at hand. Yudhishthira was filled with anxiety.

Suddenly he remembered Arjuna's son Abhimanyu and sent for him. Though only sixteen years old, Abhimanyu was brave and strong like his father and the Kauravas were scared of him. Abhimanyu obeyed the summons immediately. The boy's cheerful face lifted Yudhishthira's spirits. He put his problem to Abhimanyu. "Because we can't break out of the Kaurava circle we've already lost many brave soldiers," he explained. "Unless something is done soon, we will surely be defeated."

"Don't worry!" reassured Abhimanyu. "I'll smash through the Kaurava cordon." He told Yudhishthira his plan but added, "There is only one hitch. Though I can break through the circle, once I am within the enemy lines I do not know how to extricate myself."

"Break through the cordon," said Yudhishthira. "We'll be at your heels." Bhima and others agreed.

Yudhishthira blessed Abhimanyu and wished him luck. Abhimanyu got into his chariot and rode towards the Kauravas. The Kaurava army was immediately alarmed. "There comes Abhimanyu!" they shouted with fear. A lion-cub matching its strength against a herd of elephants!

Attacking with the speed of lightning, Abhimanyu cut his way through the cordon. But he was so quick that the Pandavas were unable to follow him and he soon found himself alone within the enemy lines. But he was dauntless and more than a match for the Kauravas. He forged ahead slaying the Kauravas left and right. Like a flame he charred all that came within his range.

Duryodhana could not bear to see the slaughter of so many of his men and advanced to face Abhimanyu alone. Dronacharya sent other warriors to help him. But, by then, Abhimanyu had cornered Duryodhana and the Kauravas were barely able to save his life.

Seeing Duryodhana in difficulties, the Kauravas worked out a clever plan. In the olden days even wars were fought honourably. Each soldier fought alone with his opponent. The Kauravas ignored this rule and with one accord fell upon the lone boy. Abhimanyu, however, turned and faced them fearlessly.

Dronacharya was filled with admiration. "Truly, no one can equal Abhimanyu in battle!" he said to the Kauravas.

This incensed Duryodhana. "You favour Abhimanyu because of your love for Arjuna," he said angrily. "What is so special about this sixteen-year-old boy? I can crush him in the palm of my hand." Duryodhana had conveniently forgotten his own recent plight at Abhimanyu's hands.

Duhshasana, supported his brother. "I will soon put an end to this villain," he boasted. He pounced on Abhimanyu with all his force but Abhimanyu soon made him eat his words. He struck Duhshasana so hard that he fell down senseless in his chariot. The Kauravas were in despair, while the Pandava camp was jubilant.

Karna was furious. Stringing his bow, he attacked Abhimanyu. But Abhimanyu fought back with his usual valour. Letting loose a barrage of arrows, he killed many Kaurava soldiers. Even Karna was wounded. The Kaurva army was thrown into disarray. Alone a sixteen-year-old boy was holding the entire Kaurava army at bay. Dronacharya's plans had misfired. Even without Arjuna, Abhimanyu had succeeded in making the Kauravas cringe.

Finally Duhshasana's young son, Lakshmana, stepped forward flourishing his mace. With renewed spirits, the Kauravas rallied behind him. The two young boys, Abhimanyu and Lakshmana, were locked in combat. Although Lakshmana fought bravely, he was unable to hold his ground against Abhimanyu and fell mortally wounded.

Duhshasana was overcome with grief. Duryodhana's rage became uncontrollable. Urging his soldiers to follow him, he fell upon Abhimanyu. Then Drona turned to Karna and said, "We cannot defeat Abhimanyu this way. You go from behind and cut the string of his bow, I will take some men with me and slay his horses and his charioteer." Karna did as he was told. But the valiant Abhimanyu drew his sword and took them all on single-handed. Slashing around him with the speed of lightning, he routed his opponents.

Drona was in despair. They had failed to vanquish a mere lad. This was a blot on the Kauravas' name. With Karna's help he tried another trick. While one broke Abhimanyu's sword, the other shattered his shield. Abhimanyu was taken aback only for a moment.

Picking up the broken wheel of his chariot he fell upon his foes like a wounded lion. The Kauravas were filled with admiration. Even though disarmed, the boy was proving invincible. Seeing the Kauravas lose heart, Duhshasana's second son attacked Abhimanyu with his mace. Abhimanyu threw away the broken wheel and also picked up a mace.

The two warriors were locked in combat. They fell but rose to fight again. But by now Abhimanyu was exhausted and could not rise quickly enough. This delay cost him his life. Seeing his chance, Duhshasana's son struck him a mortal blow, and so Abhimanyu was killed.

The Kauravas rejoiced at Abhimanyu's death, except for Karna and Drona, who wept. Dhritarashtra's son, Yuyutsu, was angry at the treachery and rebuked them. "You have done grievous wrong," he said. "What heroism is there in killing a lone boy? You should be ashamed of yourselves. Woe on you!" And with these words he threw away his armour and walked away from the field of battle.

(From the NBT Publication
Stories of Valour)

जीवन को भी पढ़ना सीखें

अशोक प्रियदर्शी

पुस्तक पढ़ना बहुत जरूरी
पर जीवन को पढ़ना सीखें।
गिरें अगर तो फिक्र नहीं है
उठें और फिर बढ़ना सीखें।
प्रेम और भाईचारा हो जिसमें
वह समाज हम गढ़ना सीखें।
साथ सभी को लेकर चलना
और शीर्ष पर चढ़ना सीखें।
बेटी-बहनों को आदर दें
मातृशक्ति-हित लड़ना सीखें।

पर्यावरण को भी बचाना होगा
कुदरत से हम हँसना सीखें।
अहंकार से मुक्त रहें हम
सबके दिल में बसना सीखें।
सतत रहें गतिशील बनें हम
सपनों को सच करना सीखें।
हँसें और खुश रहें हमेशा
सबमें खुशियाँ भरना सीखें।
पुस्तक पढ़ना बहुत जरूरी
पर जीवन को भी पढ़ना सीखें।

एम.आई.जी. 82
सहजानंद चौक, हरमू हाउसिंग कॉलोनी
राँची-834002 (झारखंड)

चूहे के गले में घंटी

श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी

एक खेत के पास कुछ चूहे रहते थे। वे खेत से अनाज के दाने खा आते थे और आराम से यहाँ-वहाँ धमाचौकड़ी करते रहते थे। कभी मन आया तो पास के घरों में भी हो आते थे और फिर अपने बिलों में मजे से सोते रहते थे।

एक बार वहाँ एक बिल्ली आ गई। वह मोटे-मोटे चूहों को देखकर पहले तो कुछ डरी कि ये चूहे ही हैं या और कुछ। पर पास में गई तो जान गई कि वे चूहे ही हैं तो उनमें से एक-दो को मारकर चट कर गई। दो-तीन दिन ऐसे ही हुआ तो चूहे इतने परेशान हो गए कि उन्होंने बिलों से निकलना ही छोड़ दिया। वहाँ खाने के लिए कुछ भी नहीं था, पर प्राण गँवाने से भूखे रहने को अच्छा समझकर वे अंदर ही बने रहे। बिल्ली को दो-तीन दिन चूहे नहीं दिखे तो उसने समझा कि चूहे कहीं और चले गए हैं। इसलिए वह भी वहाँ से चली गई।

बिल्ली की कोई आहट न मिली तो चूहे साहस करके फिर बाहर निकले, पर बिल्ली के डर से चौकन्ने बने रहे। उन्होंने खेत से बहुत-से दाने खाकर अपनी भूख मिटाई और फिर दाने बिलों में भी ले गए कि बिल्ली आए तो उन्हें भूखों न मरना पड़े। अगले कई दिनों तक बिल्ली न दिखी तो वे पहले की तरह निश्चिंत होकर घूमने लगे और धमाचौकड़ी करने लगे। एक दिन बिल्ली फिर आ गई और एक-दो चूहों को चट कर गई तो चूहों ने विचार करना शुरू किया कि बिल्ली से कैसे छुटकारा पाया जाए।

बहुत सोच-विचार करने के बाद कुछ चूहों ने कहा कि बिल्ली के गले में एक घंटी बाँध दी जाए। जब वह हमारी ओर आएगी तो हमलोग घंटी की आवाज सुनकर छिप जाया करेंगे। इससे और चूहे भी बहुत प्रसन्न हुए, पर एक

बुजुर्ग चूहे ने कहा, ''पर घंटी उसके बाँधेगा कौन?''

''हाँ, उसके पास जाएगा कौन? जो जाएगा वह तो उसे ही मार डालेगी।'' एक चूहे ने कहा तो सब चूहे फिर सोच में पड़ गए।

बहुत सोच-विचार हुआ तो एक चूहे ने कहा, ''ऐसा नहीं हो सकता कि हम किसी अपने चूहे के गले में ही घंटी बाँध दें और उसे यही काम दे दें कि वह बिल्ली की आहट लेता रहे? थोड़ी भी आहट होने पर वह घंटी बजा दे। घंटी की आवाज सुनते ही हम सब अपने बिलों में घुस जाएँ और घंटीधारी चूहा भी बिल में घुसकर अपनी प्राणरक्षा कर ले।''

किसी ने टोका, ''वह बिल्ली की ही आहट लेता रहेगा तो खाएगा क्या?''

''उसके लिए हम दाने वहीं पहुँचा दिया करेंगे। वह वहीं बैठकर बिल्ली की आहट लेता रहेगा और खाना खाता रहेगा।'' कुछ चूहों ने एक साथ कहा।

यह बात सबको जँच गई तो वे कहीं से जाकर एक छोटी-सी घंटी ले आए और उसे एक मोटे-ताजे चूहे के गले में बाँध दिया। बिल्ली की आहट पाते ही वह जल्दी-जल्दी अपनी गरदन हिलाकर घंटी बजाता और उसके पास पहुँचने से पहले ही घंटी बजाता हुआ बिल में घुस जाता। बिल्ली खिसियाकर रह जाती।

जब कई दिनों तक यही होता रहा तो बिल्ली हारकर वहाँ से चली गई और चूहे फिर

धमाचौकड़ी करने लगे, पर उन्होंने उस चूहे के गले से घंटी नहीं हटाई, इस कारण कि पता नहीं कब बिल्ली फिर से आ जाए।

द्वीपांतर
ला.ब. शास्त्री मार्ग, फतेहपुर (उ.प्र.)-212601

स्नोफॉल

अनिल 'सवेरा'

बंदर बाबू पहन के चश्मा
लेकर अपनी कार।
बंदरिया और बच्चों के संग
पहुँचे शिमला यार।

स्नोफॉल का देख नजारा
खुशी के मारे उछले।
सँभल न पाए बंदर भैया
बुरी तरह से फिसले।

शुक्र हुआ यह, चोट लगी ना
पर बहुत पछताए।
लेकिन शिमला घूमे सारा
तब ही वापस आए।

829, राजा गली
जगाधरी-135003 (हरियाणा)

The Crocodile's Sister

Sailabala Mahapatra

Pawanpur was a big village. The villagers used to keep domestic creatures. One of the villagers had some hens. For those hens he had made a shelter. There were two clay-pots kept outside the shelter, one for their food and another for water.

Everyday the master would make them free for some hours. Then these hens would wander outside for sometime and come back to their shed. It was a regular routine.

One day when the hens were wandering, one of them by mistake entered to the jungle and got confused. She could not find the way to go back. She tried again and again to get the right way to the village. But, it was in vain. After sometime she felt thirsty. She was very tired too.

The thirsty hen went on wandering

and looking for water. After sometime she found a pond. It was a big pond in the middle of the jungle. The little hen was very thirsty. So she went to the pond to drink water. But, when she entered, a big crocodile came out. He shouted loudly, "Who are you? It is my pond. I am the king of this pond. You can't drink water from here."

"Brother, I am very thirsty. I forgot the right way to my house. I don't know how to get out from this jungle. I am very thirsty. Please, please brother! allow me to drink water," the little hen prayed.

"Okay, for this time I permit. But, don't come again," the crocodile said.

"Thank you brother!" the little hen drank water and came out. After walking for sometime she got the way to the village and got back to home before the sunset.

The next day when the master made the hens free, the little hen went again to that jungle and reached the pond. She found the water in that pond very tasty. The water which was given to them in that clay pot was not sufficient. The little hen loved the pond as it was big and she was the only one to drink. She could

drink water at her will, amazingly and sufficiently.

When the little hen stretched her beak towards the water, the crocodile came out and cried out more loudly, "You came again! I denied you yesterday to come here!"

"Please brother, please! I am your little sister. I am thirsty. I like water of this pond..." But, before the hen finished her words the crocodile asked,"Why are you addressing me again and again as brother? Brother – brother – how am I your brother?"

"Yes, my brother, trust me, I am your sister!" the hen said boldly.

Hearing these words from the little creature the crocodile stopped a bit and permitted her to drink water, but warning her not to come again.The little hen drank water and returned home.

But the crocodile was in a puzzle. He failed to understand why the little hen kept on saying again and again that she was his sister. "Little creature, not even soup of my dinner, and claims to be my sister! How is it possible!" He thought and thought, but could not get an answer. He became sad and thoughtful.

Often he would come under a tree nearby the pond. This time also he came and was lying under the tree in a thoughtful mood.

A lizard was there who would come very often to the crocodile when the later took rest under the tree. They used to gossip for sometime and return to their own places.

This time also the lizard came. But seeing the crocodile in such a mood she asked, "What happened my friend? Why are you in such a thoughtful mood? You look worried, but why?"

The crocodile explained everything to the lizard and said, "I do not understand why that little hen says so boldly that she is my sister!"

"Yes my friend, she is your sister," the lizard said.

"You are also saying the same thing! But how? She is a tiny creature of the plains. I am the king of this pond. I live in water. How can she be my sister! Impossible!" the crocodile resented.

"It is possible, you both are brother and sister," the lizard said.

The crocodile looked at the lizard in a questioning manner. To answer the matter the lizard replied, "Yes my friend. Don't be so serious. Relax. She is your sister as you are born out of an egg and she too! You both are born from the egg. So you both are brother and sister!"

(Based on an ethnic legend from the Saura Tribe of Odisha)

नाटक

अनोखी सजा

डॉ. शोभा अग्रवाल

पात्र परिचय

प्राचार्या जी - साड़ी पहने हैं।

अध्यापिकाएँ - साड़ी पहने हैं।

अध्यापकगण - पैंट-शर्ट पहने हैं।

चपरासी - कुर्ता-पायजामा पहने हैं।

विभिन्न आयुवर्ग के छात्र-छात्राएँ- सभी स्कूल यूनीफॉर्म पहने हैं।

(परदा खुलता है।)

(पहला दृश्य)

(गाँव की प्राथमिक पाठशाला है। मंच पर आम का पेड़ रखा है, जिसमें कुछ आम लटक रहे हैं। कच्चे आम का ढेर रखा है। कुछ बच्चे अपने स्कूल-बैग में आम भर रहे हैं।)

(चपरासी का प्रवेश)

चपरासी - (बच्चों से) क्या हो रहा है? छुट्टी हो गई, घर नहीं गए?

(सभी बच्चे डरने लगे।)

एक बच्चा - वो...आ... खेल रहे थे।

चपरासी - बस्ते में आम भर रहे हो, चलो बड़ी बहन जी के पास।

(बच्चों का चपरासी के साथ प्रस्थान)

पट परिवर्तन

(दूसरा दृश्य)

(प्राचार्य-कक्ष का दृश्य : गाँधी जी का चित्र लगा है। मंच पर कुरसी-मेज पड़ी हैं। कुरसी पर प्राचार्या जी विराजमान हैं। मेज पर कुछ रजिस्टर रखे हैं, कुछ कुरसियाँ और पड़ी हैं।)

(चपरासी का बच्चों के साथ प्रवेश, बच्चे डर के कारण भयभीत हैं।)

चपरासी - बहन जी! विद्यालय की छुट्टी हो गई और ये बच्चे घर न जाकर विद्यालय के आम के पेड़ से आम तोड़कर उन्हें बस्ते में भर रहे थे।

(प्राचार्या जी अपनी कुरसी से उठकर बच्चों के पास आती हैं व उनके बीच में खड़ी होकर उनके सिर पर हाथ फेरती हैं। बच्चों का भय कम होता है।)

प्राचार्या जी - प्यारे बच्चो! फल खाना अच्छा है। वैसे भी, आम तो फलों का राजा है। लेकिन तुमने तो चोरी की है, वह भी कच्चे आमों की। तुमने उन्हें पूरी तरह पकने भी नहीं दिया।

बच्चो! आम बस्ते से निकालकर रख दो और सीधे घर जाओ। देर होने पर घर वाले चिंता करेंगे। और हाँ, कल विद्यालय जरूर आना तब प्रार्थना में तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें बताएँगे।

(बच्चे बस्ते से आम निकालकर मेज पर रख देते हैं।)

बच्चे - प्रणाम बहन जी!

(प्राचार्या जी बच्चों के गाल थपथपाती हैं।)

(बच्चे सहज भाव से घर की ओर प्रस्थान करते हैं।)

पट परिवर्तन

(तीसरा दृश्य)

(प्रातःकालीन प्रार्थनासभा का दृश्य है। माइक लगा है। कुछ बच्चे माइक के सामने खड़े हैं। प्राचार्या जी बीच में खड़ी हैं। अन्य अध्यापक-अध्यापिकाएँ उनके अगल-बगल खड़े हैं। बच्चे लाइन लगाकर कई पंक्तियों में खड़े हैं।)

(प्रार्थना आरंभ होती है।)

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे
भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता...
दूर अज्ञान के हों अँधेरे
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
बैर हो न किसी का किसी से
भावना मन में बदले की हो न
इतनी शक्ति हमें देना दाता...
हम न सोचें हमें क्या मिला है
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण

फूल खुशियों के बाँटें सभी को
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन
इतनी शक्ति हमें देना दाता...
अपनी करुणा का जल तू बहा के
कर दे पावन हर एक मन का कोना
इतनी शक्ति हमें देना दाता...

(माइक पर खड़े बच्चे किनारे हो जाते हैं, प्राचार्या जी माइक पर आती हैं।)

प्राचार्या जी - सुप्रभात बच्चो!

सब बच्चे - सुप्रभात बहन जी!

प्राचार्या जी - बच्चो! विद्यालय में आम का पेड़ लगा है। कल कुछ बच्चों ने विद्यालय की छुट्टी होने के बाद पेड़ से आम तोड़े। अभी अप्रैल का महीना है इसलिए आम कच्चे हैं। बच्चों ने कल ही आम तोड़ लिए, वह भी बिना पूछे।

एक बच्चा - बहन जी, कौन हैं वे बच्चे?

प्राचार्या जी - यह जानकर क्या करोगे? हमारा उद्देश्य है कि ऐसी गलती दोबारा न हो।

बच्चो! तुममें से कोई बता सकता है कि इन बच्चों ने क्या गलती की है?

एक बच्चा - चोरी की।

प्राचार्या जी - ठीक है सुमित। चोरी के अलावा और भी कोई गलती की हो तो बताओ?

दूसरा बच्चा - कच्चे आम तोड़ लिए, आमों को पकने का पूरा समय नहीं दिया।

प्राचार्या जी - ठीक है प्रिया। अन्य कोई गलती ऐसी भी है जिससे किसी को खतरा हो सकता था।

तीसरा बच्चा - हाँ बहन जी! इन्होंने पत्थर फेंककर आम तोड़े होंगे, जिससे पत्थर इनको भी लग सकता था, दूसरों को भी।

प्राचार्या जी - शाबाश रोहित! आगे आओ।

(रोहित आता है।)

प्राचार्या जी - रोहित तुम ही बताओ कि इन बच्चों को क्या सजा दी जाए?

रोहित - बहन जी, यदि इन बच्चों को गलती का एहसास हो गया हो, तो इन्हें क्षमा कर दीजिए। आपने ही सिखाया है कि गलती का एहसास हो जाने पर क्षमा कर देना चाहिए, क्योंकि क्षमा से बड़ा कोई अस्त्र नहीं होता।

प्राचार्या जी - (रोहित की पीठ ठोंकते हुए) ठीक कहा रोहित तुमने...

(इतने में चोरी करने वाले बच्चों में से एक बच्चा सिर झुकाए हुए आता है।)

बच्चा - बहन जी! हमने चोरी की है, हमें कड़ी सजा दीजिए।

(चोरी करने वाले अन्य बच्चे भी आगे आ जाते हैं व सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

प्राचार्या जी - सजा तो अवश्य मिलेगी। इन्हें क्या सजा दी जाएगी, यह बताएँगी अंजली बहन जी।

(अंजली बहन जी माइक पर आती हैं।)

अंजली बहन जी- प्राचार्या जी के आदेशानुसार इन बच्चों को एक अनोखी सजा दी जाएगी। ये पाँचों बच्चे विद्यालय में एक-एक पेड़ लगाएँगे। माली के सामने ये लोग खुरपी से गड्ढा खोदकर माली के निर्देशानुसार पेड़ लगाएँगे व उसमें पानी डालेंगे। यह कार्य ये बच्चे खेल के पीरियड में करेंगे।

अंजली बहन जी- हर बच्चा एक पेड़ लगाए

धरती तब स्वर्ग बन जाए!

प्राचार्या जी - हर बच्चा एक पेड़ लगाए

सब बच्चे - धरती तब स्वर्ग बन जाए!

(पटाक्षेप)

आर्य महिला आश्रम
न्यू राजेंद्र नगर
नई दिल्ली-110060

दो कविताएँ

रमा नीलदीप्ति शर्मा

बारिश हो, बच्चे धूम मचाएँ

आसमान में बादल छाए
कारी-कारी घिरी घटाएँ
सूरज चाचू जा छिप बैठें
जब बारिश का मौसम आए।

नभ में ज्यूँ ही गरजे बादल
मोर नाच-नाच हों पागल
कोयल तोता मैना गाएँ
बारिश हो, बच्चे धूम मचाएँ।

आँधी आई, आँधी आई

आँधी आई, आँधी आई
माँ भी चौके में चिल्लाई
बंद करो खिड़की दरवाजे
आसमान में मिट्टी छाई।

खड़-खड़-खड़ पत्ते बोल रहे
लट्ट-पट्ट पंछी लौट रहे
सुनो, सांय-सांय ध्वनि दे सुनाई
लो, आँधी पीछे अब बारिश आई।

ramasharmaneeldeepti@gmail.com

Interesting Facts about July

Surekha Sachdeva

July is the seventh month of the year in the Julian and Gregorian calendars and is 31 days long. The month of July was previously called *Quintilis* in Latin since it was the fifth month in the ancient Roman calendar. The name of the month was changed to July in honour of Julius Caesar during the Julian calendar reform. July is the warmest month of the year in the Northern Hemisphere. Several historical events and inventions took place in this month. Not only this, several great personalities in the field of literature, politics, art and culture were also born in this month.

1 July

- *1882*: Dr. Bidhan Chandra Roy, second Chief Minister of West Bengal and renowned physician was born in Patna, Bihar. Dr. Roy worked for the upliftment of patients and started various hospital. His birthday is celebrated as National Doctor's Day in India.
- *1938*: Internationally acclaimed flautist of India, Pandit Hariprasad Chaurasia was born in Allahabad. For his outstanding contributions to Indian music, Pandit Chaurasia has been recognized and conferred upon with many national and international honours like Padma Bhushan, Padma Vibhushan, Ustad Hafiz Ali Khan Award and Sangeet Natak Academy Fellowship Award.
- *1955*: State Bank of India was constituted under the State Bank of India Act 1955, for the purpose of taking over the undertaking and business of the Imperial Bank of India. The Imperial Bank of India was founded in 1921 under the Imperial Bank of India Act 1920.
- *1997*: After more than 150 years of British rule, Hong Kong was returned to Chinese control. Britain had held the New Territories north of Hong Kong under a 99-year lease that expired in 1997, requiring the 'handing back' of the colony to China. Under the 'One Country, Two Systems' policy, Hong Kong retained its own legal system, currency,

customs policy and immigration laws for a minimum 50 years after the handover.

4 July

- *1776*: Independence Day of United States of America. On this day, USA delcared independence from Great Britain.

6 July

- *1920*: Radio compass was used for the first time for aircraft navigation.

9 July

- *1877*: The inaugural Lawn Tennis Championship was played on top of the Croquet Lawns at Wimbledon, Spencer W Gore taking the men's singles title.

11 July

- *1989*: The Governing Council of the United Nations Development Programme recommended to observe 11 July as World Population Day in order to focus attention on the urgency and importance of population issues.

18 July

- *1918*: Nelson Mandela, the first black president of South Africa was born in Transkei, South Africa. He joined the African National Congress in 1942 and in 1964, he was convicted for sabotage as a result of his participation in the struggle against apartheid. He spent 28 years in jail. He was released in 1990. He was honoured with Nobel Peace Prize and Bharat Ratna among others. He died at his home in Johannesburg on 5 December, 2013.

20 July

- *1919*: Explorer Edmund Hillary was born in Auckland, New Zealand. In 1953, he became first to ascend Mount Everest, the highest mountain in the world at 29,023 ft.

21 July

- *1899*: Ernest Hemingway, noted American author, was born in Oak Park, Illinois. His works included: *The Sun Also Rises* (1926), *A*

Farewell to Arms (1929), *For Whom the Bell Tolls* (1940) and *The Old Man and the Sea* (1952). He was awarded the Nobel Prize in 1954.

- *1969*: Neil Armstrong, American astronaut became the first person to walk on the moon, stepping down from the spacecraft Apollo 11.

22 July

- *1947*: The National Flag of India was adopted in its present form during the meeting of Constituent Assembly held on the 22 July 1947, a few days before India's Independence from the British on 15 August 1947.

23 July

- *1856*: Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, scholar, mathematician, philosopher and freedom fighter was born in Ratnagiri, Maharashtra. He published two weekly newspapers *Kesari* in Marathi, and *The Mahratta* in English. He also founded the Deccan Education Society. He advocated boycott of British goods and passive resistance which was later adopted by Mahatma Gandhi during Non-cooperation Movement against the British.

24 July

- *1802*: French playwright and novelist Alexandre Dumas (1802-1870) was born in Villers-Cotterets, France. His works included *The Count of Monte Cristo* and *The Three Musketeers*.
- *1898*: American pilot Amelia Earhart was born in Atchison, Kansas. She became the first woman to fly solo across the Atlantic and to fly solo from Hawaii to California. She perished during a flight from New Guinea to Howland Island over the Pacific Ocean on 3 July 1937.

25 July

- *2007*: Smt. Pratibha Patil served as the 12th President of India from 2007 to 2012. She is the first Indian woman to hold the office. She earned a master's degree in political science and economics at Moolji Jaitha College, Jalgaon, and later received a law degree from Government Law College, Mumbai (Bombay). She joined the Indian National Congress and entered politics in 1962 as a member of the Maharashtra legislative assembly.

26 July

- *1856*: Irish playwright George Bernard Shaw was born in Dublin, Ireland. Winner of the Nobel Prize for Literature in 1925, he acquired a reputation as the greatest dramatist in the English language during the first half of the 20th century. His famous works include *My Fair Lady*, the musical adaptation of *Pygmalion, Major Barbara, Saint Joan* etc.

surekha_sachdeva@rediffmail.com

गीत गिनती का

डॉ. अर्चना रानी वालिया

इक्का, दुक्का, तिक्का जी
चले न खोटा सिक्का जी।

दुक्का, तिक्का, चौका जी
दो न किसी को धोखा जी।

तिक्का, चौका, पंजा जी
कर मत झूठ का धंधा जी।

चौका, पंजा, छक्का जी
मेहनत का फल पक्का जी।

पंजा, छक्का, सत्ता जी
सच तुरुप का पत्ता जी।

छक्का, सत्ता, अट्ठा जी
पीना ताजा मट्ठा जी।

सत्ता, अट्ठा, नौवाँ जी
साल जिओ तुम सौवाँ जी।

अट्ठा, नौवाँ, दस्सा जी
खत्म कहानी किस्सा जी।

286, स्नेह कुंज कॉलोनी
जौनपुर दक्षिण, कोटद्वार
गढ़वाल- 246149 (उत्तराखंड)

विज्ञान कथा

हृदय परिवर्तन

डॉ. प्रदीप मुखोपाध्याय 'आलोक'

...गतांक से आगे

विभोर को अचानक सब कुछ याद आ गया। झाड़ियों में घुसने के बाद जिस चमकती हुई धातु पर उसकी नजर पड़ी थी वह इन प्राणियों का यान ही था। बेहोश करके वे लोग उसे अपने ग्रह पर ले आए थे। 'लेकिन अगर ये मित्र हैं तो मुझे इस तरह चोरी से क्यों उड़ा लाए हैं,' विभोर ने मन-ही-मन सोचा। उसके विचारों के सिलसिले को उसी आवाज ने तोड़ा। विभोर से मुखातिब होकर वह आवाज कहने लगी, "इसका भी जवाब तुम्हें मिल जाएगा। चौंको नहीं। तुम्हारे मस्तिष्क की तरंगों को पढ़कर तुम्हारे मन में उठने वाले विचारों को पकड़ने की क्षमता हमारे अंदर मौजूद है। हम तुम्हारे मित्र ही हैं। तुम्हें भूख-प्यास लगी होगी। अभी मेज पर तुम्हारे सामने एक पेय आ जाएगा। तुम उसे पी लेना। तुम्हारी भूख-प्यास मिट जाएगी। इससे तुम्हारे अंदर एक नया उत्साह भी जगेगा और तुम्हारे मन का डर भी जाता रहेगा।"

धातु के बने अजीब-से मेज पर अष्टभुजाकार एक गिलास जाने कहाँ से प्रकट हो गया। उत्सुकतावश विभोर ने गिलास को उठाया तो उसमें अजीब-सा काले-नीले रंग का एक पेय उसे नजर आया। विभोर सोच ही रहा था कि पेय को पिए या नहीं कि अचानक कमरे में वह आवाज फिर से गूँजी, "डरो नहीं। यह जहर नहीं है। इसे अच्छे बच्चे की तरह चुपचाप पी जाओ। फिर अपने ग्रह के बारे में तुम्हें बताऊँगा। हम शत्रु नहीं बल्कि मित्र हैं इसका विश्वास तुम्हें जल्दी ही हो जाएगा।"

मन में डर तो था, लेकिन लाचारी थी। कुछ झिझकते हुए विभोर ने वह पेय अपने हलक के नीचे उड़ेल लिया। जिंदगी में उसने इतना स्वादिष्ट पेय पहले कभी नहीं पिया था। अचानक उसे अपने अंदर एक नया जोश उमड़ता महसूस हुआ। उसके अंदर का डर भी जाता रहा था। कमरे में वह आवाज फिर से गूँजी, "क्यों, अब अच्छा लग रहा है न? भूख-प्यास मिटाने के लिए हम सभी इसी पेय का इस्तेमाल करते हैं। शरीर के लिए जरूरी विटामिन, प्रोटीन, खनिज लवण आदि सभी कुछ इसमें मौजूद हैं। अब अपने ग्रह के बारे में तुम्हें बताता हूँ। हमारे ग्रह का नाम अर्जेम्पी है यह मैं पहले भी तुम्हें बता चुका हूँ। हमारे दो पड़ोसी ग्रह हैं जिनके नाम प्लेटम्पी तथा टाइटेम्पी हैं। ये तीनों ग्रह एक ही तारे के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं। हमारे तारे या सूरज का नाम है ऑरम्पी। इस तरह हमारे सूरज की ग्रहमालिका में तीन ग्रह हैं। तुम्हारे सूरज की ग्रहमालिका में तो हमसे तीन

रोबोट इन ग्रहों से प्लेटिनम तथा टाइटेनियम का खनन कर ले जाते हैं। इन ग्रहों तक पहुँचने के लिए विशेष रूप से निर्मित फोटोन रॉकेटों का वे सहारा लेते हैं। हमारे अपने ग्रह से भी चाँदी का खनन ये कंप्यूटर-नियंत्रित रोबोट कर लाते हैं।

गुना ज्यादा यानी पूरे नौ ग्रह हैं।''

वह आवाज थोड़ी देर के लिए रुकी। विभोर यह सुनकर आश्चर्य-सागर में डूब गया था। 'हमारे सौरमंडल के अलावा भी ग्रहमालिका का अस्तित्व है इस बारे में हमारे खगोलविदों ने पता तो लगाया था, लेकिन उनमें से किसी ग्रह के निवासी से मेरी बातचीत होगी यह तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।' विभोर के मन में उठते इन विचारों को पढ़कर वह आवाज बोली, ''लेकिन यह हकीकत है। हमारे सूरज के बारे में तुम धरतीवासियों को अभी तक कोई जानकारी नहीं है। हमारे सूरज में सोने तथा मैंगनीज अयस्कों का अथाह भंडार है। हमारे अपने ग्रह में भी चाँदी के अयस्कों के भंडार हैं। हमारे पड़ोसी ग्रह प्लेटम्पी में प्लेटिनम तथा टाइटेम्पी में टाइटेनियम के अयस्क प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। कंप्यूटर नियंत्रित हमारे विशेष

इस तरह प्लेटिनम, टाइटेनियम तथा चाँदी इन तीनों धातुओं को एक खास अनुपात में मिलाकर एक मिश्र धातु हम तैयार करते हैं। इस मिश्र धातु में न तो जंग लगने का खतरा रहता है और न उसके कमजोर पड़कर चटकने या टूटने का ही। इस मिश्र धातु से ही हमारे मकान की दीवारें एवं छतें, फर्नीचर, रॉकेट आदि सभी कुछ बनते हैं।''

थोड़ी देर के लिए वह आवाज आनी बंद हो गई। विभोर यह सब सुनकर दाँतों तले अंगुलियाँ दबा रहा था। लेकिन उसे एक चिंता खाए जा रही थी कि इस ग्रह का अदृश्य प्राणी उसके सामने क्यों नहीं आ रहा है तथा वह उससे क्या चाहता है। उसके मन की बात को ताड़कर वह आवाज फिर से कहने लगी, ''तुम्हारे मन में उठते सभी प्रश्नों का उत्तर तुम्हें मिल जाएगा। ... मैं कह रहा था कि वह मिश्र धातु हमारे लिए

बहुत काम की है। हमने कुछ स्मार्ट पदार्थों का निर्माण भी किया है। मिश्र धातु तथा स्मार्ट पदार्थों से ही हमारे भवन आदि बने हैं। अष्टभुजाकार हमारे विशेष यान मिश्र धातु एवं इन स्मार्ट पदार्थों से ही बने हैं। तुम्हारी धरती पर भी हमारे यान जाते हैं जिन्हें तुम धरतीवासी 'उड़नतश्तरी' का नाम देते हो। तुमने हमारे विशेष रूप से निर्मित पदार्थों के बारे में तो जान लिया, लेकिन क्या तुम जानना नहीं चाहते कि हमारी ऊर्जा की जरूरत कैसे पूरी होती है?''

सुनकर विभोर बोला, ''जब सब कुछ बता ही रहे हो तो लगे हाथ इसे भी बता दो। लेकिन अपनी बात जरा जल्दी पूरी करो। मुझसे तुमलोग क्या चाहते हो यह जानने की मेरी उत्सुकता बढ़ती जा रही है। तुम मेरे सामने क्यों नहीं आते हो? सामने बैठकर भी तो ये सारी बातें तुम मुझसे कर सकते हो।''

वह आवाज बोली, ''ठीक है। तुम्हारे सामने ही चला आता हूँ। लेकिन मेरे सिर को देखकर डर से कहीं तुम चीख न पड़ो। छोटी गिलहरी तुमने देखी होगी। उसी गिलहरी के सिर को दस गुना अगर बड़ा कर दो तो उसी तरह का सिर हम सबके पास है। लेकिन मैं तुम्हारे सामने तुम धरतीवासियों के सुंदर रूप में ही आऊँगा।''

अचानक कहीं से एक प्राणी विभोर के सामने कुरसी पर आकर बैठ गया। विभोर ने देखा तो देखता ही रह गया। किसी अंतरिक्षयात्री की पोशाक में ही वह अदृश्य प्राणी अब उसके सामने बैठा था। उसका सिर धरतीवासियों जैसा ही था। विभोर को देखकर वह मुस्कराया। लेकिन उसकी मुस्कराहट में एक अजीब-सा भाव था। विभोर को देखकर वह बोला, ''हाँ, तो मैं तुम्हें बता रहा था कि हमारी ऊर्जा की जरूरत कैसे पूरी होती है। अपने विशेष धातु के रिफलेक्टरों का इस्तेमाल करके तथा उन्नत टेक्नोलॉजी द्वारा सौर ऊर्जा का हम दोहन करते हैं। इसके लिए अंतरिक्ष में विशेष सौर स्टेशन हमने बना रखे हैं। खास धातुओं से हमने विशिष्ट सौर सेल भी बनाए हैं जो हमारी छोटी-मोटी ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करते हैं। तुम्हारी धरती पर भी सौर ऊर्जा को लेकर अनेक प्रयोग चल रहे हैं। लेकिन अभी इस क्षेत्र में तुमलोगों को बहुत आगे जाना है। तभी सही तरह से सौर ऊर्जा का दोहन और इस्तेमाल तुम धरतीवासी कर पाओगे। हम इसमें तुम्हारी मदद कर सकते हैं कहकर अर्जेम्पीवासी जान-बूझकर रुक गया।

विभोर बोला, ''वह सब तो ठीक है, लेकिन मुझे जबर्दस्ती क्यों उठा लाए हो पहले उसी का खुलासा करो।''

सुनकर अर्जेम्पीवासी बोला, ''ठीक है। पहले उसी पर आता हूँ। हमें मालूम है कि जीन प्रौद्योगिकी में आजकल तुम्हारे यहाँ के वैज्ञानिक काफी काम कर रहे हैं। हाल ही में मानव जीनोम परियोजना द्वारा जीनों के बारे में तुम्हारे वैज्ञानिकों ने काफी कुछ पता लगाया है। लेकिन अभी तक धरतीवासी कोशिश ही कर रहे हैं। कुछ जानवरों की क्लोनिंग में तुमलोगों को

सफलता भी मिली है, लेकिन हमारे लिए यह बाएँ हाथ का खेल है। तुम चाहो तो तुम्हें इसका जीता-जागता नमूना पेश कर सकते हैं।''

सुनकर विभोर बुरी तरह से चौंका। बोला, ''जीता-जागता नमूना? आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?'' यह सुनकर वह अर्जेम्पीवासी बोला, ''देखो, तुम्हारे घर वाले परेशान हो रहे होंगे। हम तुम्हारा डुप्लीकेट या क्लोन बनाकर उसे तुम्हारे घर भिजवा देंगे। असल में, हम धरतीवासियों पर प्रयोग करना चाहते थे। लेकिन सीधे-सीधे इसके लिए कोई तैयार नहीं होता। इसलिए हमें जबरदस्ती तुम्हारा अपहरण करना पड़ा।

इससे पहले भी हम कुछ बच्चों को इसी तरह उठा लाए थे। मानवों पर हमारा प्रयोग अब काफी उन्नत अवस्था में है। हमने एड्स से पीड़ित कुछ बच्चों पर भी प्रयोग किए हैं तथा और भी लाइलाज मर्ज, जैसे कि हीमोफीलिया आदि से पीड़ित बच्चों पर भी कुछ प्रयोग किए हैं। तुमलोगों के बारे में काफी जानकारी हमारे पास है। हम तुमलोगों की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहते हैं तथा तुम्हारी मदद करना चाहते हैं, लेकिन तुम धरतीवासी हमसे डरकर भागते रहते हो।''

सुनकर विभोर एकदम सकते की स्थिति में आ गया। अर्जेम्पीवासी का उद्देश्य तो अच्छा

था! लेकिन उन्होंने ये कैसा तरीका अपना रखा था। अब उसके क्लोन को उसके घर भेज दिया जाएगा और वे उस पर यहाँ तरह-तरह के प्रयोग करेंगे। मन-ही-मन विभोर को बड़ी वितृष्णा हुई। बोला, ''तो तुम हम बच्चों का गिनीपिग की तरह इस्तेमाल करते हो। निजी जिंदगी में टाँग अड़ाए जाना किसी को भी पसंद नहीं। तुमलोग बहुत समर्थ हो सकते हो, लेकिन हम धरतीवासियों में भी स्वाभिमान है। हमें अपने पर भरोसा भी है। हमारे वैज्ञानिकों ने विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा काम भी कर दिखाया है। तुमलोग जबरदस्ती हम पर वर्चस्व क्यों जमाना चाहते हो? हमें हमारे हाल पर ही छोड़ दो।''

सुनकर अर्जेम्पीवासी गंभीर हो गया। कुछ देर सोचने के बाद बोला, ''मुझे तुम्हारी बातें अच्छी लगीं। तुम धरतीवासी स्वावलंबी बनकर कुछ कर दिखाना चाहते हो यह जानकर हैरत और खुशी दोनों हुई। अब तक जबरदस्ती ही धरतीवासी बच्चों पर हम प्रयोग करते रहे हैं। लेकिन तुमलोगों का स्वाभिमान देखकर मेरी आँखें खुल गईं। तुम धरतीवासियों के बारे में एक नई ही धारणा हमारे सामने उभरकर आई है। आगे से बच्चों पर प्रयोग करना हम बंद कर देंगे। तुम्हें भी तुम्हारे घर पहुँचा दिया जाएगा।''

सुनकर विभोर हैरत से भर गया। अर्जेम्पीवासी के हृदय परिवर्तन पर उसे घोर आश्चर्य हुआ। लेकिन आपस में जब तक खुलकर बात न हो तो एक-दूसरे की विचारधारा स्वतंत्र रूप से सामने नहीं आ पाती हैं, विभोर ने सोचा। उसने धैर्यपूर्वक अर्जेम्पीवासी की बातों को सुना तो उसका सही परिणाम सामने आ गया था। नहीं तो आगे भी जाने कितने ही मासूम बच्चों पर अर्जेम्पीवासी अपना प्रयोग करते रहते। यह सोचकर कि धरतीवासियों का वे भला कर रहे हैं।

विभोर जिस तरह गायब हुआ था उसी तरह अचानक धरती पर प्रकट हो गया। सभी हैरान थे। उसने अंकुर को पूरी घटना कह सुनाई। सुनकर अंकुर बोला, ''तुम कह रहे हो तो मुझे मानना पड़ेगा। लेकिन इन सब बातों पर विश्वास करने का मेरा मन नहीं करता। खैर, जो हुआ अच्छा हुआ। कम-से-कम धरती के मासूम बच्चों पर अर्जेम्पीवासी आगे से कोई प्रयोग तो नहीं करेंगे। लेकिन हमारे धरतीवासियों की आँखें कब खुलेंगी? बच्चों से जबरदस्ती मजदूरी कराई जाती है तथा उन पर जो अत्याचार होता है उसका सिलसिला कब रुकेगा?''

सुनकर विभोर बोला, ''तुम ठीक कहते हो अंकुर। हम बच्चों का शोषण तथा हम पर अत्याचार बंद होना चाहिए। अगर दूसरी सभ्यता के लोग इस बात को समझ गए तो हमारे अपने ही लोग इस बात से आखिर कब तक मुँह मोड़कर बैठे रहेंगे।''

343, देशबंधु सोसायटी
15 आई.पी.एक्सटेंशन
दिल्ली-110092

As I Read It

When Bruno Came to my Home

Tamanna Pankaj

This story is about Bruno, a little Labrador Retriever puppy who was born at the outskirts of Surat, a city perched on the left bank of the river. Bruno came to the author's house in November. Bruno was sent to Delhi by author's uncle and aunt through train.

In the early days, if Bruno loved anything more than being cuddled and fed, it was people's shoes. Bruno became a shoe thief. He used to take shoes away and hide them under the bed or in an innocuous corner of the house and then used to spend his time tearing the shoes apart and chewing and swallowing the softer parts. Bruno also loved to play in parks and meadows.

Bruno was a hydrophonic. It was very difficult to take him to the shower even. Bruno loved food as much as he loved life itself. He also liked to experiment with different types of food. Author's mother used to bake a pizza minus cheese and salt for him specially, but still Bruno prefered one from famous eating joint.

Bruno's last days were very difficult. When he was around nine, one of his forepaws got infected. Several remedies were tried but nothing really seemed to work. Around the same time Bruno was discovered with kidney stones. In his last days he began to spend

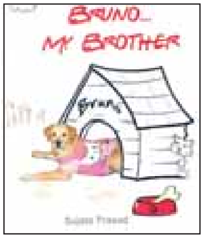

Bruno: My Brother
Sujata Prasad
Kathachitra Prakashan
Rs. 360.00 — 50pp

most his time with author's grandfather

After sometime Bruno died surrounded by his loved ones.

This story has been beautifully written by the author Sujata Prasad which truely makes the reader emotional. Moreover, the positive point of this book is the printing of pictures with U.V. coating which gives the feeling of originality or we can say the feeling of touching a real dog and people. The reader after reading this story will surely relate himself or herself with his or her own pet story. Even I after reading this story have related it with the story of my black labrador of 60 days whose activities are same as that of Bruno.

UG-1, 3/186, Rajendra Nagar
Sector-2, Sahibabad
Ghaziabad-201305 (UP)

गधा बना शेर

डॉ. नीता सरकार

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक कुम्हार रहता था। वह मिट्टी के बरतन बनाकर बेचता था। उसके पास एक गधा था, जिसे वह बहुत प्यार करता था।

रोज सुबह वह अपने गधे पर बरतन रखकर गाँव-गाँव बेचने जाता था। एक बार वह शाम को बरतन बेचकर जब जंगल के रास्ते से घर आ रहा था तो उसे शेर की खाल मिली। वह उसे उठाकर घर ले आया।

घर आकर कुम्हार ने वह खाल अपनी पत्नी को दी। उसकी पत्नी ने वह खाल अपने गधे को पहना दी। गधा शेर जैसा दिखने लगा। यह देखकर कुम्हार के मन में चालाकी-भरा विचार आया। वह अपनी पत्नी से बोला, ''क्यों न गधे को शेर की खाल पहनाकर खेतों में छोड़ दिया करें। इससे गधे को भरपेट खाना मिल जाएगा। इस तरह जो पैसा हम गधे के खाने पर खर्च करते हैं वह भी बच जाएगा।''

पत्नी ने कहा, ''कहीं हम पकड़े न जाएँ।''

कुम्हार, ''अरे नहीं, शेर को देखकर अच्छे-अच्छे लोग डरकर भाग जाएँगे। फिर, हम रोज तो ऐसा करेंगे नहीं। केवल सप्ताह में एक या दो बार इसे किसी के खेत में छोड़ देंगे।''

इस प्रकार शेर बना गधा किसी के भी खेत में घुस जाता। 'शेर' को देखकर सभी गाँववाले अपने घरों में छिप जाते। गधा भरपेट अनाज खाता। इस तरह, यह सिलसिला महीनों चलता रहा।

एक बार एक सैनिक गाँव से गुजर रहा था। उसने देखा, लोग इधर-उधर भाग रहे हैं। उसने भागते हुए एक किसान से पूछा, ''इस तरह सब लोग भाग क्यों रहे हैं?''

किसान, ''भाई, मुझे छोड़ दो। देखते नहीं, हमारे खेत में शेर घुस आया है। मुझे अपनी जान बचाने दो।''

सैनिक, ''खेत में शेर का क्या काम!''

किसान, ''यह शेर कभी-कभी आता है और जिस खेत में घुसता है उसकी शाक-सब्जी खा जाता है।''

सैनिक गाँववालों की मूर्खता पर मन-ही-मन हँसा और बोला, ''शेर कब से सब्जी खाने लगा! जरूर इसमें कोई राज है। अभी इसका पता लग जाएगा। तुम जाकर कुछ आदमियों को लाठी के साथ बुला लाओ। कहीं से भोंपू मिल जाए तो वह भी ले आना। आज मैं तुम्हें इस शेर से सदा के लिए छुटकारा दिला दूँगा।''

कुछ देर में आठ-दस आदमी लाठी लिए वहाँ आ गए। सैनिक ने जोर से भोंपू बजाया। गधा यह आवाज सुनकर डर के मारे 'ढेंचू-ढेंचू' करने लगा। लोग समझ गए, यह शेर नहीं, गधा है। उन्होंने उसे लाठी से मार-मारकर अधमरा कर दिया।

कुम्हार ने जब अपने प्यारे गधे की ऐसी हालत देखी तो जोर-जोर से रोते हुए कहने लगा, ''मुझे आपलोग माफ कर देना। हाय! लालच में आकर मैंने अपनी रोजी-रोटी में सहायता करने वाले अपने पुत्र समान गधे की दुर्दशा करवा ली। दूसरों को धोखा देने की मुझे सजा मिल गई।''

सच ही है, जो दूसरों को धोखा देकर अपना उल्लू सीधा करते हैं उन्हें इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

ए-91, फेज-2
अशोक विहार
दिल्ली-110052

My Page

The Large World with Different Things!

Ansh Tangri

This large world has different things
Like poor beggars and rich kings
Women wearing steel bangles and diamond rings
People fighting and some celebrating things
All the people have one belief
That God is there and always gives them relief
All problems are like old leaves
Some fall away or fly away with great speed
Some people always lose hope
Like a mountaineer who falls when his rope is cut
Happy are those who maintain courage
Like a full grown rose
With thorns for protection
And a stem for bearing
The large world with different things

anshtangri4@gmail.com

खुद करके देखो

घर के टब में चलती नाव

आइवर यूशिएल

ये चीजें जमा करो :

बेलनाकार कॉर्क का टुकड़ा, एक बड़ा वाला हेयरपिन, टीन का एक टुकड़ा, दो प्लास्टिक के मोती, रबर-बैंड, थोड़ी-सी-वार्निश या कोई-सा इनैमल रंग, ब्रुश, एक पेपर क्लिप, कैंची व प्लास।

बनाना शुरू करो :

सबसे पहले तो तुम साथ के चित्र को जरा ध्यान से देखो। फिर कॉर्क को जैसा यहाँ दिखाया गया है लंबाई में आधा काटो। इन दो भागों में से एक को फिर आधा कर दो और इस आधे भाग के एक को अपने काम में लाओ।

तुमने देखा होगा कि नाव का अगला भाग कभी चपटा और चौड़ा नहीं होता। यह हमेशा पतला व नुकीला चोंचदार-सा होता है। है न? बस, तुम्हें भी अपनी नाव की शक्ल ऐसी ही बनानी है।

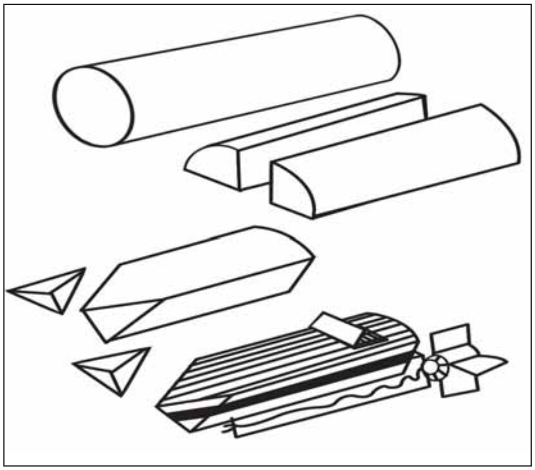

इसके लिए ऐसा करो कि कॉर्क के एक सिरे की तरफ से चित्र के अनुसार दो टुकड़े काटकर अलग कर दो, ताकि नाव आगे बढ़ने के लिए पानी को आसानी से काट सके।

अब हेयरपिन को मोड़कर ऐसा आकार दे दो ताकि इसे नाव के नीचे की ओर जड़ा जा सके। पर एक बात का ध्यान रखना। पिन को मोड़ते समय इसके पीछे की तरफ एक छल्ला भी बनाना है तुम्हें।

प्रोपेलर बनाने के लिए कॉर्क का एक छोटा-सा बेलनाकार टुकड़ा लेकर इस पर टीन के चार छोटे-छोटे आयताकार टुकड़े जड़ दो।

पेपर क्लिप को सीधा करके इसे कॉर्क के बीच से गुजारो। फिर एक तरफ से तो इसको मोड़ दो, ताकि कॉर्क इस ओर से निकल न जाए तथा दूसरी तरफ से मोती पिरोकर तार को हेयरपिन में बने छल्ले से गुजारो और इसके दूसरे सिरे पर एक धुंडी-सी बना दो।

रबर-बैंड बाँधते ही तुम्हारी नाव तैयार है। हाँ, एक काम और करो। इनैमल रंग या वार्निश गत्ते के ऊपर फेरकर इसे जरा अच्छी तरह से सूख जाने दो।

बस! अब प्रोपेलर को घुमाकर रबर-बैंड में थोड़े-से बट डालो और इसे अपने टब के पानी पर तैरा दो। प्रोपेलर घूमेगा और नाव चल पड़ेगी सैर पर! क्यों, है न यह मजेदार खेल?

सी-203, कृष्णा काउंटी, रामपुर
नैनीताल, मिनी बाइपास, बरेली-243122 (उ.प्र.)

Colour: *The Language of Contrasts, Accords and Unity*

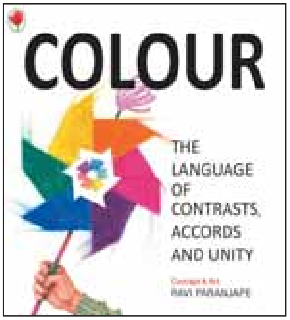

An innovative book that seeks to introduce to children the concept of certain basic colours like yellow, red, green, blue, orange, purple, etc. and how do they contrast and accord to each other and how they find unity when they interact with each other.

Ravi Paranjape is a well-known illustrator, painter and author.

Colour: ***The Language of Contrasts, Accords and Unity***
Ravi Paranjape
National Book Trust, India
₹ 45.00 24pp

An Epic of Environment Child Songs

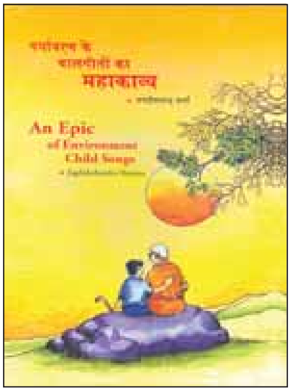

An Epic of Environment Child Songs
Jagdishchandra Sharma
Harishankar Vyas (Tr.)
Buland Banas Prakashan
₹ 300.00 102pp

This is a bilingual book of poems in Hindi and English languages. The poems in the book talk about the dangers that loom large on earth to harm environment and humanity including various types of pollution, digging, mining and excessive use of plastic bags etc. The author of the book has echoed the dire need to conserve environment to bring peace and prosperity to earth, thereby saving humanity from decline.

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication: 14/07/2014

HELP THIS MOUSE PULL THE RIGHT STRING!